भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

# सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVII अंक–13 15 जुलाई, 2022

**बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंघु नररूप हरि। महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।**
मैं उन गुरु महाराज के चरण कमल की वंदना करता हूँ, जो कृपा के समुद्र और नर रूप में श्रीहरि ही हैं और जिनके वचन महामोहरूपी घने अन्धकारके नाश करने के लिये सूर्य–किरणों के समूह हैं।। **श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड)/5**

## स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-1/2022/46982 दिनांक 10.6.2022 के अनुसार **प्रो. अनुराग मित्तल** ने 7.6.2022 से संस्थान के कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में इन्टर भा.प्रौ.सं. संकाय विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/49022 दिनांक 17.6.2022 के अनुसार **डॉ. धीरज** ने 13.6.2022 से संस्थान के नैनोस्केल अनुसंधान सुविधा (एन. आर.एफ.) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/50609 दिनांक 23.6.2022 के अनुसार **डॉ. अशुंल शर्मा** ने 20.6.2022 से संस्थान के सेन्स (SENSE) केन्द्र में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/49417 दिनांक 22.6.2022 के अनुसार **प्रो. (सुश्री) कुमारी प्रीति सिन्हा** ने 20.6.2022 से संस्थान के जैव रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव प्रौद्योगिक विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. (सुश्री) कुमारी प्रीति सिन्हा को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/51668 दिनांक 28.6.2022 के अनुसार **प्रो. चक्का मोहन नाग साई चन्द** ने 11.5.2022 से संस्थान के परिवहन अनुसंधान एवं चोट रोकथाम केन्द्र में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो चक्का मोहन नाग साई चन्द को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/54545 दिनांक 6.7.2022 के अनुसार **प्रो. मो. रशीद इबन इस्लाम** ने 30.6.2022 से संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. मो. रशीद इबन इस्लाम को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/57707 दिनांक 6.7.2022 के अनुसार **प्रो. समिरन मण्डल** ने 28.6.2022 से संस्थान के वायुमण्डलीय विज्ञान केन्द्र में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. समिरन मण्डल को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/54361 दिनांक 5.7.2022 के अनुसार **प्रो. (सुश्री) अर्चना सामंता** ने 1.7.2022 से संस्थान के वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. (सुश्री) अर्चना सामंता को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की

अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/54734 दिनांक 6.7.2022 के अनुसार **प्रो. अभिजीत राज** ने 4.7.2022 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल 13ए2 में सह-प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/54074 दिनांक 5.7.2022 के अनुसार **प्रो. सयैद मोहम्मद रेजा खलिल** ने 1.7.2022 से संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2022/51582 दिनांक 27.6.2022 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) सुरुचि फियालोक** ने 27.6.2022 से संस्थान के इंजीनियरी विभाग में मूल्य शिक्षा का राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र (NRCVEE) में पोस्ट-डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2022/47924 दिनांक 14.6.2022 के अनुसार **सुश्री रिजवाना** ने 20.5.2022 से संस्थान में कनिष्ठ सहायक (लेखा) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt-II/2022/50374 दिनांक 22.6.2022 के अनुसार **श्री मोगनराज एम.** ने 20.5.2022 से संस्थान के निर्माण अनुभाग में कनिष्ठ इंजीनियर के रूप में सातवें वेतन आयोग के लेवल-6 में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt-II/2022/53410 दिनांक 1.7.2022 के अनुसार **श्री सचिन वर्मा** ने 30.6.2022 से संस्थान के निर्माण अनुभाग में कनिष्ठ इंजीनियर के रूप में सातवें वेतन आयोग के लेवल-6 में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt-II/2022/54349 दिनांक 5.7.2022 के अनुसार **श्री मनप्रीत सिंह** ने 1.7.2022 से संस्थान के वायुमण्डलीय विज्ञान केन्द्र में वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप मे सातवें वेतन आयोग के लेवल-5 में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt-II/2022/52733 दिनांक 30.6.2022 के अनुसार **श्री संजय कुमार सिंह** ने 25.5.2022 से संस्थान के लेखा परीक्षा अनुभाग में कनिष्ठ अधीक्षक के रूप मे सातवें वेतन आयोग के लेवल-6 में कार्यभार ग्रहण किया है।

## मानव जीवन और सफलता

मानव जीवन संसार की सर्वोत्तम कृतियों में एक है, हमें इसे सच्चाई, ईमानदारी और खुशी के साथ बिताने की हरसंभव कोशिश करनी चाहिए। जीवन एक संघर्ष है और असफलता और सफलता के बीच केवल एक कदम भर का ही फासला है, जीवन में सफलता पाने के लिए असफलता का स्वाद चखना जरूरी है क्योंकि वही हमें सही–गलत की पहचान कराती है। सफलता का महत्व तभी पता लग पाता है जब वह असफलताओं के बाद मिले, कवि एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा है:

**क्या हार में क्या जीत में किंचित नहीं भयभीत मैं**
**कर्तव्य पथ पर जो चला, ये भी सही, वो भी सही।**

इस बात का ध्यान रहे कि कोई भी असफलता जीवन श्रृंखला का अंतिम छोर नहीं है। असफलता से डर कर अत्यन्त परेशान व निराश होना ठीक नहीं है। अपितु अपने निकट सम्बन्धियों, मित्रों और सहयोगियों के साथ विश्वासघात है जो कि आपसे प्रेम करते हैं तथा चाहते हैं कि आप जीवन में उनके साथ रहें, खुश रहें और आगे बढते रहें। किसी परीक्षा में असफल होने के पश्चात निराश होने के बजाय हमें कोशिश करनी चाहिए की हम दोगुने उत्साह के साथ उस परीक्षा के लिए तैयारी करें। कविवर हरिवंश राय बच्चन ने सच लिखा है:

**कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती**
**लहरों से डरकर कभी नौका पार नहीं होती।**

आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प और कडी मेहनत ही सफलता की कुंजी है परन्तु बिना आत्मसंतोष और खुशी के वह सफलता व्यर्थ है। सफलता उस परछाई की तरह है जो आपसे उतना ही दूर भागती है जितना आप उसे पाने की कोशिश करते हैं। सफलता की मंजिल पाने के लिए अत्यधिक सोच–विचार करने के बजाय अपने काम को खूब मेहनत से मन लगाकर करें तो सफलता स्वयं ही आपके पीछे–पीछे आएगी। असफलताओं को बीती बात समझकर पीछे छोड़ते जाइये और एक नयी शुरूआत की तरह आगे बढ़ने की कोशिश कीजिये, तभी सही अर्थों में इस जीवन का उद्देश्य सफल हो पाएगा। मानव जीवन के परिप्रेक्ष्य में कविवर जयशंकर प्रसाद की निम्नलिखित पंक्तियां आज भी पूर्णतया तर्कसंगत हैं:

**इस पथ का उद्देश्य नहीं है, श्रांत भवन है टिक जाना**
**किन्तु पहुंचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं है।**

–डॉ. भास्कर कनसेरी
सह प्रोफेसर, भौतिकी विभाग

## ''राजभाषा नीति, उसका महत्व व कार्यान्वयन'' विषय पर कार्यशाला

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में शिक्षा मंत्रालय द्वारा समय–समय पर राजभाषा हिन्दी के संबंध में कार्यशाला एवं विचार–विमर्श संगोष्ठी इत्यादि आयोजित करने के लिए निर्देश जारी किए जाते हैं, इसी का अनुपालन करते हुए संस्थान में 30 जून, 2022 को **''राजभाषा नीति, उसका महत्व व कार्यान्वयन''** विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में पिछले कुछ वर्षों में नव-नियुक्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित नोडल अधिकारियों को भी शामिल किया गया। इस कार्यशाला में लगभग 40 प्रतिभागियों ने भागीदारी की।

सर्वप्रथम डॉ. नीरज चौरसिया (अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष) ने जीवित पौधा भेंट करके प्रो. टी.आर. श्रीकृष्णन (उपनिदेशक, प्रचालन) तथा डॉ. दीपिका भास्कर (कुलसचिव) का स्वागत किया। इसके उपरान्त संस्थान उप निदेशक प्रो. श्रीकृष्णन ने जीवित पौधा भेंट करके हमारे अतिथि वक्ता डॉ. सत्येन्द्र सिंह का अभिनन्दन किया।

कार्यशाला की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष ने कहा कि इस कार्यशाला का उद्देश्य कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के प्रति प्रोत्साहित करना तथा मंत्रालय से प्राप्त निर्देशों एवं लक्ष्यों को प्राप्त करना है। इस कार्यशाला का एक उद्देश्य यह भी है कि पिछले कुछ वर्षों में संस्थान में कार्यभार ग्रहण करने वाले नए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी राजभाषा संबंधी ज्ञान एवं जानकारी हो।

आपने उप निदेशक (प्रचालन) तथा कुलसचिव को कार्यशाला में अपना बहुमूल्य समय एवं हिन्दी कक्ष को सतत सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

संस्थान कुलसचिव ने सभी प्रतिभागियों एवं अतिथि वक्ता का स्वागत करते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित की। आपने राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों में उसके उपयोग पर बल दिया तथा बताया कि इस तिमाही में संस्थान ने अच्छी प्रगति की है जोकि सभी के सहयोग से संभव हो सका है, हमें इस प्रगति को बनाए रखना है। दैनिक प्रशासनिक कार्यों में आने वाली समस्याओं पर चर्चा के साथ–साथ आज की इस कार्यशाला से उनके समाधान भी प्राप्त किये जा सकते हैं।

प्रो. टी.आर. श्रीकृष्णन ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि अतिथि वक्ता डॉ. सत्येन्द्र सिंह जी का कार्य अनुभव बहुत लम्बा रहा है यहां से प्राप्त ज्ञान को सभी प्रतिभागी अपने दैनिक प्रशासनिक कार्यों में उपयोग करेंगे, ऐसी आशा है तथा इसी में कार्यशाला की सार्थकता भी है। आपने हिन्दी कक्ष द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किए जा रहे कार्यों तथा नियमित रूप से समीक्षा बैठकें व कार्यशालाओं के आयोजन को लेकर सराहना की।

डॉ. चौरसिया ने अतिथि वक्ता डॉ. सत्येन्द्र सिंह (सचिव, उप समिति, संसदीय राजभाषा समिति) का परिचय देते हुए कार्यशाला में उनके वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया।

डॉ. सत्येन्द्र सिंह जी ने सभी को धन्यवाद एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज की कार्यशाला का विषय हमारी अस्मिता, पहचान एवं आत्मा से संबंधित है। आपने संविधान के अनुछेद 53 में निहित सरकारी कर्तव्यों के प्रति शपथ सहित राजभाषा के अनुछेद 343 से 351 तक पर भी चर्चा की आपने जीवन की व्यवहारिकताओं का उदाहरण प्रस्तुत करके राजभाषा के महत्व को दर्शाया। आपने संघ की राजभाषा नीति व उसके महत्व पर विस्तृत चर्चा करते हुए संस्थान में इसके कार्यान्वयन पर भी जानकारी प्रदान की। सभी प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह एवं मनोयोग से सत्येन्द्र सिंह जी को सुना तथा अपने प्रश्न पूछकर समस्याओं का निवारण भी किया।

अंत में सुश्री रमा शर्मा (सहायक कुलसचिव, हिन्दी कक्ष) ने सभी प्रतिभागियों, अतिथि वक्ता, अध्यक्ष, हिन्दी कक्ष, हिन्दी कक्ष के स्टाफ सदस्यों को सफलतापूर्वक कार्यशाला समापन के लिए धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन किया।

## त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/49554 दिनांक 23.6.2022 के अनुसार **डॉ. प्रसाद सोनी,** पोस्ट-डॉक्टरल फेलो (यांत्रिक इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 24.6.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. प्रसाद सोनी को 24.6.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-2/2022/49694 दिनांक 20.6.2022 के अनुसार **श्री अभिलाष,** कनिष्ठ सहायक ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 20.6.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री अभिलाष 20.6.2022 को संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है। सक्षम प्राधिकारी ने श्री अभिलाष को संस्थान में उनके पद पर एक वर्ष का पुनर्ग्रहणाधिकार भी प्रदान किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-2/2022/45811 दिनांक 7.6.2022 के अनुसार **श्री अंकेश कुमार,** कनिष्ठ सहायक ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 8.6.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री अंकेश कुमार 8.6.2022 को संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

## आजादी का अमृत महोत्सव

# संयुक्त राष्ट्र की सराहनीय भाषाई पहल

*हिंदी, बांग्ला और उर्दू को स्वीकार करने से संयुक्त राष्ट्र की इन भाषा–भाषियों की बड़ी आबादी तक सीधी पहुंच बनेगी*

**प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल**

दस जून, 2022 हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के लिए एक ऐतिहासिक दिन सिद्ध हुआ, इस दिन संयुक्त राष्ट्र महासभा में पारित बहुभाषावाद संबंधी एक प्रस्ताव में पहली बार हिंदी भाषा का उल्लेख हुआ, प्रस्ताव में बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए आधिकारिक भाषाओं के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, उर्दू, पुर्तगाली, स्वाहिली और फारसी को संयुक्त राष्ट्र के कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। यह संयुक्त राष्ट्र के कामकाज के तरीके में एक बड़े परिवर्तन का संकेत है। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्र के सभी आवश्यक कामकाज और सूचनाओं को इसकी आधिकारिक भाषाओं के अलावा दूसरी भाषाओं जैसे–हिंदी, बांग्ला और उर्दू में भी जारी किया जाए, संयुक्त राष्ट्र महासभा की छह आधिकारिक भाषाएं हैं, इनमें अरबी, चीनी (मंदारिन), अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश शामिल है, किंतु संयुक्त राष्ट्र सचिवालय के कामकाज की दो ही भाषाएं है–अंग्रेजी और फ्रेंच।

बहुभाषावाद को संयुक्त राष्ट्र के बुनियादी मूल्यों में गिना जाता है। इस संदर्भ में एक फरवरी, 1946 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के पहले सत्र में अपनाए गए सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 13 (1) का उल्लेख करना आवश्यक है। इसमें कहा गया था कि संयुक्त राष्ट्र अपने उद्देश्यों को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक कि दुनिया के लोगों को इसके उद्देश्यों और गतिविधियों के बारे में पूरी जानकारी न हो। भारत इस उद्देश्य को प्राप्त करने में संयुक्त राष्ट्र के साथ खड़ा है। वर्ष 2018 से ही भारत संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग के साथ साझेदारी कर रहा है, जिसका लक्ष्य हिंदी भाषा में संयुक्त राष्ट्र की पहुंच को बढ़ाना और दुनिया भर में हिंदी बोलने वाले लोगों को जोड़ना है। संयुक्त राष्ट्र की वेबसाइट और इसके इंटरनेट मीडिया खातों के माध्यम से हिंदी में संयुक्त राष्ट्र के समाचार पहले से ही प्रसारित किए जा रहे हैं।

जहां तक भारतीय भाषाओं का प्रश्न है तो हिंदी, बंग्ला और उर्दू बोलने वालों का कुल योग किया जाए तो हम मंदारिन बोलने वालों से अधिक हैं। इन भाषाओं को स्वीकार करने से संयुक्त राष्ट्र की पहुंच इन्हें बोलने वाली एक अरब की आबादी तक सीधे बन गई है, लेकिन यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि केवल संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा होने से भारतीय भाषाओं का प्रश्न हल नहीं होता है।

आज नहीं तो कल किसी एक भारतीय भाषा को हमें पूरे देश की संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार करना होगा। वह केवल राजभाषा बनाने से नहीं होगा, बल्कि उसे व्यवहार की भाषा बनाना होगा। जहां तक हिंदी की स्वीकृति का प्रश्न है तो संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी अबूधाबी ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अरबी और अंग्रेजी के बाद हिंदी को अपनी अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल कर लिया है। हिंदी को अदालत की तीसरी आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलना दुनिया भर में हिंदी को मिल रहे सम्मान की एक और मिसाल है।

हिंदी दुनिया में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने बाली भाषा है। प्रशांत महासागर के द्वीपीय देश फिजी में हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया है। नेपाल, मारीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम जैसे देशों में भी हिंदी प्रमुखता से बोली जाती है। हिंदी को विश्व भर में लोकप्रिय बनाने और उसे संयुक्त राष्ट्र की एक आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किए जाने की दिशा में प्रयास जारी है। इस संबंध में संसद में पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का एक वक्तव्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। सुषमा स्वराज ने एक सवाल के जवाब में कहा था कि संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को एक आधिकारिक भाषा बनाने में सबसे बड़ी समस्या संयुक्त राष्ट्र के नियम हैं। संयुक्त राष्ट्र के नियम के अनुसार संगठन के 193 सदस्य देशों के दो तिहाई सदस्यों यानि 129 देशों को हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के पक्ष में वोट करना होगा और इसकी प्रक्रिया के लिए वित्तीय लागत भी साझा करनी होगी। इस वजह से हिन्दी का समर्थन करने वाले आर्थिक रूप से कमजोर देश इस प्रक्रिया से दूर भागते हैं। भारत सरकार इस संबंध में फिजी, मारीशस, सूरीनाम जैसे देशों से समर्थन लेने की कोशिश कर रही है जहां बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग रहते हैं। जब भारत को इस तरह का समर्थन मिलेगा और समर्थन करने वाले देश वित्तीय बोझ को भी सहने के लिए तैयार हो जाएंगे, तब हिंदी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बन जाएगी।

इन सभी विसंगतियों के बीच 2014 के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने वैश्विक स्तर पर हिंदी को पहचान दिलाई है। कई अवसरों पर भारतीय नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में अपने वक्तव्य दिए हैं। विश्व मंच पर भारत जितना मजबूत होगा भारत की भाषाएं भी उतनी ही मुखरता से वैश्विक कार्यव्यवहार, व्यापार और राजनय की भाषा के रूप में उभरकर आएंगी। इस प्रकार 10 जून, 2022 के प्रस्ताव को केवल हिंदी के आलोक में देखा जाना बेमानी होगा, क्योंकि यह प्रस्ताव मूल रूप से संयुक्त राष्ट्र को बदलने का प्रस्ताव है। यह प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र में केवल कुछ भाषाओं की अधिकारिता से मुक्त एक बहुभाषी विश्व से आगे बढ़ाने की दृष्टि से लिया गया है, जो आज पूरी दुनिया की आवश्यकता है। बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र का यह एक महत्वपूर्ण कदम है। संयुक्त राष्ट्र के इस प्रस्ताव से भारत की बहुलतावादी एवं बहुभाषिकता नीति को एक तरह से स्वीकृति मिली है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी भारत की बहुभाषिकता को एक ताकत के रूप में देखती है।

साभार–दैनिक जागरण 20.6.2022

(लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति हैं)

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

*मुद्रकः* सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com